P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11* February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

उत्तर मध्यकालीन निर्गुण सन्त पलटूदास : जीवन एवं दर्शन

भानु प्रताप गुप्ता
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
आगरा कॉलेज, आगरा,
उत्तर प्रदेश, भारत

वाई0एन0 त्रिपाठी
विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
आगरा कॉलेज, आगरा,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

उत्तर मध्यकालीन निर्गुण सन्त पलटूदास एक युग दृष्टा, अद्वितीय प्रज्ञावान, समाजवाद के उद्‌बोधक सन्त थे। उन्होंने अपने ज्ञान, भक्ति, तपस्या और निश्छल वाणी से तत्कालीन समाज में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। सन्त पलटूदास का पलटना शोभा, सम्मान, आदर्श एवं त्याग का कार्य था। क्योंकि सन्त पलटू मात्र भौतिक सुखों से नहीं पलटे, अपितु ऐद्रिकता के सारे आकर्षणों से पलटूकर प्रबल बन्धनों के विरूद्ध आत्मलोक की ओर मुड़ गये।

सन्त पलटूदास का जीवन यथार्थ की प्रयोगशाला थी। कबीर, नानक, दादू तथा रैदास की भांति युग वेदनाओं को आत्मसात किया तथा सामाजिक एवं धार्मिक तांतों को सुलझाने का उपक्रम करते हुए अग्नि को समर्पित कर दिए गये। सन्त पलटूदास का जीवन समाज के उपेक्षित तथा शोषित वर्ग को समर्पित था। उनके दर्शन में द्वन्द्व का कोई स्थान नहीं था। उन्होंने आस्था को विश्वास से जोड़ा। ज्ञान को ही भगवान माना। साम्प्रदायिकता का विरोध करके हिन्दू मुस्लिम सभी को साथ लेने का सन्देश तत्कालीन परिस्थितियों में एक क्रान्तिकारी सोच का द्योतक था। जाति, वर्ग तथा धर्म के स्थान पर ईश्वर भक्ति को ''साहिब के दरबार में केवल भक्ति पियार'' का नाम दिया।

मुख्य शब्द : आत्मा, परमात्मा, साहिब, ब्रह्म, जीव, नूर, सतगुरू, नाम।

प्रस्तावना

सामाजिक विचारधारा के विषय में अपने पूर्ववर्ती निर्गुण सन्तों के सामाजिक संदेशों के अनुरूप संत पलटूदास ने भी तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखण्ड, संकीर्णता, जाति प्रथा, पुरोहितवाद एवं अवैज्ञानिक सामाजिक मान्यताओं का विरोध करके सामाजिक समता तथा सभी वर्गों को समान सामाजिक अधिकार प्रदान करने की शिक्षा दी।

शोध पत्र का उद्‌देश्य

1. सन्त पलटूदास के जीवन तथा दर्शन के महत्व का अध्ययन करना।
2. सन्त पलटूदास के विचारों की व्यापकता का अध्ययन करना।
3. सन्त पलटूदास की रचनाओं में विभिन्न संदेशों का अध्ययन करना।
4. सन्त पलटूदास के व्यक्तित्व तथा कृतित्व का मूल्यांकन करना।

साहित्यावलोकन

शोधकार्य में निम्न ग्रन्थों का अध्ययन किया गया है।

शहाबुद्‌दीन ईराकी (2012), मध्यकालीन भारत में भक्ति आन्दोलन (सामाजिक तथा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य), चौखम्बा सुर भारती प्रकाशन, वाराणसी। मध्यकालीन भारत में भक्ति आन्दोलन पर विशेष रूप से सन्त परम्परा पर प्रामाणिक लेखन किया गया है। लेखक के मूल स्रोतों का उपयोग करके सभी सन्तों के जीवन तथा कार्यों पर 9 लेखन किया। इस ग्रन्थ का हिन्दी, फारसी, अरबी तथा संस्कृत भाषा के मूल स्रोतों का उपयोग महत्वपूर्ण पक्ष है।

पलटू साहिब की बानी (2014) बेलवीडियर प्रेस, इलाहाबाद। पलटूदास की वाणियों को विभिन्न भागों में विभक्त करके तीन खण्डों में प्रकाशित किया गया है। मूल स्रोत के रूप में इस प्रकाशन का महत्व है।

रामचन्द्र शुक्ल (2010) हिन्दी साहित्य का इतिहास, मलिक एण्ड कम्पनी, दिल्ली। मध्यकालीन निर्गुण–सगुण सन्तों तथा कवियों का व्यापक परिचय इस ग्रन्थ में दिया गया है। लेखक ने हिन्दी भाषा की दृष्टि से गहन प्रस्तुतीकरण किया है। समालोचना अद्‌भुत है।

रामकुमार वर्मा (1958) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन, प्रयाग। लेखक ने सन्त साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन व्यापक अर्थों में किया है। प्रामाणिकता के लिए मूल स्रोतों का आश्रय लेकर लेखन को वैज्ञानिक तथा प्रामाणिक बनाया गया है।

ताराचन्द (1962) इन्फलुन्स ऑफ इस्लाम आन इंडियन कल्चर, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद। सूफीवाद की गहनता से विवेचना की गई है। साथ ही भारतीय समाज तथा धर्म पर सूफीवाद का क्या प्रभाव पड़ा, इसकी विवेचना भी की गई है। लेखक ने रहस्यवाद पर विस्तृत चर्चा की है।

पी0डी0 बड़थवाल, (1936), निर्गुन स्कूल ऑफ हिन्दी पोइट्री, बनारस। इस ग्रन्थ में निर्गुण भक्ति परम्परा पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है। लेखक ने कबीर नानक, दादू, मलूकदास तथा पलटूदास के दर्शन पर भी आलोचनात्मक टिप्पणी की गई है।

विषय विस्तार

सन्त पलटूदास ने अपने घट अर्थात् शरीर में ही अड़सठ तीर्थों को माना है। संत पलटूदास के अनुसार वास्तव में अन्तरात्मा के रहस्यों को समझ लेना ही मोक्ष है। विभिन्न तीर्थों में व्यर्थ भटकने से कुछ नहीं होता। काशी हिन्दुओं का प्रमुख स्थान है, उसे संत पलटूदास ने काया माना है और ज्ञान को अवधपुरी। उनकी दृष्टि में इन्द्रिय ही मथुरा है, जिस पर निग्रह परमावश्यक है। पुष्कर ध्यान है। गंगा, यमुना तथा सरस्वती आदि पवित्र नदियाँ भी घट में ही हैं। प्रयाग का संगम भी घट ही में स्थित है। ब्रह्मज्ञानी अन्यत्र न जाकर, ऐसे ही आत्मतत्व की जानकारी कर अथवा आत्मतीर्थ को पहचानकर मुक्ति पा जाते हैं। दसवें द्वार (ब्रह्मरंध) पर द्वारिका है जहां मन रूपी बद्रीनाथ स्थिति है। जगन्नाथ समदरसी है। नीमसार निर्णय करता है और हरिद्वार हरि भजन की ओर प्रेरित करता है। इस प्रकार सभी तीर्थों की स्थिति, संत पलटूदास ने घट ही में मानी है।[1]

संत पलटूदास के अनुसार तीर्थ यात्रा व्रत करना तो वास्तव में अपना समय नष्ट करना अथवा जन्म ही व्यर्थ के कार्यों में लगाना है।[2] सारा संसार सुख शान्ति और कल्याण की की ओर उन्मुख है। संभवतः ये सभी आडम्बर तीर्थ एवं व्रत आदि इसी कल्याण के हेतु किये जाते हैं। संत पलटूदास के मतानुसार, ''यह न भूलना चाहिए कि वास्तविक शान्ति, कल्याण अथवा मुक्ति केवल तीर्थों में जाकर नहीं मिल सकती। तीर्थों में मेढ़क भी तो अपने सारे परिवार के साथ रहता है फिर उसे मुक्ति क्यों नहीं होती। धन व्यय करने से हरि की प्राप्ति नहीं होती।[3] देह प्रक्षालन मात्र से मन के विकार तथा उसकी मलिनता नहीं नष्ट होती। तीर्थ भ्रमण करते हुये भी लोग अनेक दुर्व्यसनों तथा वासनाओं में रत रहते हैं, तो फिर ऐसे तीर्थ से क्या लाभ। माया, ममता, लोभ[4], मोह जब तक नष्ट नहीं होते तब तक व्यर्थ धन व्यय में कैसी बुद्धिमत्ता। संत पलटूदास ने माना कि घट अर्थात् व्यक्ति के अन्तः मन में ही राम हैं। पलटूदास कहते हैं कि वस्तु अपने ही पास है फिर भी अज्ञानी मनुयष्य उसे खोजने के लिए अन्यत्र भटकता रहता है। इस प्रकार सारा संसार इसी भ्रमजाल में उलझा हुआ है। पलटूदास ने अपने प्रिय की खोज में गंगा जमुना काशी आदि स्थानों पर जाकर स्नान किया पर उससे उनके प्रिय की प्राप्ति में तनिक भी सहायता न मिली।[5] वस्तु अपने पास होते हुये भी अज्ञानी, सांसारिक व्यक्ति उसे पर्वतों पर खोजा करता है, उसे तनिक भी अपने घट की सुधि नहीं। जप–तप तीर्थ व्रत आदि में वह उसी सार वस्तु के लिए दौड़ता है। वह स्वयं अपने को भूल जाता है और बताने पर भी सही मार्ग पर नहीं आता। इस प्रकार भ्रम में पड़ा हुआ व्यक्ति देश देशान्तर में भटका करता है। सार वस्तु से दूर रह कर ऐसा अज्ञानी व्यक्ति पानी पाकर पाथर को ही ग्रहण कर पाता है।[6] सभी ओर से निराश हो जाने के बाद ही, पलटूदास को ज्ञान हुआ कि तीर्थ, व्रत आदि सभी व्यर्थ हैं।[7]

सन्त पलटूदास ने सारे कर्म काण्ड तथा बाह्य आचारों को पाखण्ड मानते हुये उस ब्राह्मणवादी को धिक्कारा है जो बगुला के समान मांस भक्षण करता हुआ भी यज्ञोपवीत, टीका आदि धारण करने वाला ब्राह्मण बना हुआ है।[8] सन्त पलटूदास साधु समाज को सम्बोधन कर कहते हैं कि सारा संसार ही पाखण्डी बन गया है। किसी को भी खरे खोटे का ज्ञान नहीं रहा। मौन होकर गूंगा बन जाना अथवा वनवास में वनमानुष रूप में इधर उधर मटकने से क्या लाभ। मेढ़क के समान जल में रहने का क्या अर्थ। इस प्रकार ऐसे पाखण्डी व्यक्तियों की गणना पटलूदास सन्तों में नहीं करते।[9] साधु संतों की सेवा कोई भी नहीं करता पर वेषधारी, पाखण्डी नागा बलपूर्वक, इच्छानुसार वस्तु प्राप्त कर लेते हैं। साधु संतों से कोई ढंग से बात तक नहीं करता और ऐसे पाखण्डियों को समाज में पूरा सम्मान मिलता है। दुआ ताबीज आदि देने वाले मौलवी अथवा पंडित नियामत पाते हैं। पलटूदास समाज की ऐसी दशा और लोगों का पतन देखकर चिन्तित लगते हैं और बहुधा उनकी आंखों में आंसू आ जाते हैं।[10] कितने ही लोग ऐसे पाखण्डी हैं जो परिवार त्याग कर घर से चल पड़ते हैं।

सन्त पलटूदास का मानना था कि मानव के समस्त दोषों का मूल कारण अज्ञानता और अंध विश्वास ही है। विवेक बुद्धि के नष्ट हो जाने पर बहुधा लोग औचित्य–अनौचित्य का विचार न करते हुये अंधे की भांति अन्य व्यक्तियों के संकेत पर चलते हैं। उनके ऐसे कार्य समाज और धर्म के सर्वथा प्रतिकूल होते हैं। पलटूदास कहते थे कि गांवों में अधिकतर लोग परिवार में किसी के अस्वस्थ होने पर भूत, शीतला आदि की पूजा करते हैं।[11] बहुधा लोग मिट्टी का ऊँचा चौरा बनाकर उस पर बलि देते हैं और अपने देवता को संतुष्ट कर उससे वांछित फल की प्राप्ति करते हैं।[12] हिन्दू और मुसलमान दोनों के मुर्दा जलाने तथा गाड़ने की पद्धति को पलटूदास जी ने अच्छा नहीं माना है। दोनों को व्यर्थ बताया है।[13] धर्म और समाज के क्षेत्र में अनेक कुरीतियों, रूढ़ियों और अंध विश्वासों को उत्पन्न कर धर्म और समाज को विकृत करने का उत्तरदायित्व पूर्ण रूप से कुछ धार्मिक और सामाजिक नेताओं अथवा पंथ विशेष ने महंतों पर रहा है। ऐसे व्यक्ति सदा ही सम्मान और प्रतिष्ठा की इच्छा से मूर्ख, जनता का नेतृत्व किया करते थे और उन्हें पथ भ्रष्ट

कर स्वयं लाभान्वित होते रहे हैं। संतों की दृष्टि इन पर पहुंची और फिर इनकी कटु आलोचना की परम्परा चल पड़ी। पलटूदास ने पंडित, मोलवी, महंत आदि की लगभग 50 पदों में भिन्न–भिन्न स्थलों पर सीधे–सीधे आलोचना की है।

निष्कर्ष

सन्त पलटूदास ने वर्ण व्यवस्था और जाति पांति का विरोध किया। वर्ण व्यवस्था जाति पांति पर पलटूदास ने 32 पदों में भिन्न–भिन्न स्थलों पर अपना विचार प्रगट किया है। एक बड़ी ही सुन्दर उक्ति द्वारा पलटूदास ने सभी वर्णों को एक समान माना है। एक ही माटी का प्रयोग कर कुम्हार रूपी परमात्मा ने भिन्न–भिन्न स्वरूप प्रदान किया है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सैंयद, शेख सभी का लहू, मांस तथा हड्डी समान ही है। सभी एक ही ब्रह्म द्वारा रचे गये हैं। सभी में एक ही जीव एक ही प्रकार का धाम है फिर सब में यह भेद क्यों? सुनार एक ही सोने से भिन्न–भिन्न आभूषण तैयार करता है। हो सकता है विभिन्न आभूषणों का स्वरूप भिन्न हो पर वस्तु अथवा तत्व जिससे गहने का निर्माण हुआ है, एक ही है। अतः सभी गहने एक हैं। यदि ज्ञान दृष्टि से देखा जाय तो यह भेद भी नष्ट हो सकता है और फिर सारे संसार को एक मानना चाहिए। इस प्रकार पलटूदास की दृष्टि में जाति पांकति का प्रपंच मिथ्या है।

सन्त पलटूदास हिन्दू और मुसलमान में तनिक भी भेद नहीं मानते क्योंकि सभी एक परम पुरूष की संतान हैं, सब में उसी की ज्योति है। सभी में एक ही रक्त मज्जा हड्डी और मांस समान है। कनक और गहना जिस प्रकार एक हैं उसी प्रकार हिन्दू और मुसलमान में पूर्ण एकत्व हैं दोनों एक ही कुम्हार द्वारा एक ही मिट्टी के प्रयोग से निर्मित हैं।[14]

अंत टिप्पणी

1. *है कोई सखियां सयानी आत्म तीर्थ नहाय।। काशी काया भीतर अवधपुरी है।।*
2. *जिन पाया तिन पाया है, सतसुंग सखीरी।। तीरथ व्रत करे, कोउ कितनों, नाहक जन्म गमाया है।। (पलटू साहिब की बानी, भाग 1, पृ0 54*
3. *केतनों तीरथ जरत कै बहु द्रव्य लुटाई।, जिन पाया तिन आप में सतसुरन शरखाई।। .....*
4. *घट में तीरथ घाट है कोउ लेइ नहाई।। देह पखारे क्या भया मन मैला माई।। .....*
5. *मैं बैरागिनि अपने पिया की खोजत फिरों उदासी है।।*
6. *गंगा जमुना बहुत नहानेखोजा मथुरा कासी है। जांसे पूछों कोई न बतावै परी प्रेम की फांसी है।।....*
7. *तीरथ व्रत में फिरे बहुत चित लाई कै।, जल पखान को पूजि सुए पछिताई कै।।.....*
8. *मलमति, हरल तुहार पांडे बमना पांडे देखो बूक्ति विचार।। मछली मेंड़ा चिरई खायो काहे गाय बुराई।। शब्दावली, पृ0 144/409*
9. *साधो भाई पाखडै जग पूजै खोटा खरा न मुझे। काह भयो मुख मौन मये से गंगा नाहीं बोलै।। शब्दावली, पृ0 177/495*
10. *जोर जुलूम कै मिश्रा भाई, क्लऊ धरम होय बरियाई। रीरी कै द्वारे सीत न पावैं, कदुहा सोटा मारि मरावै।। शब्दावली, पृ0 286/806*
11. *रमिता सब घटु रमि रहा क्या तुम भटकन जावै। मट्टी का तेरा द्योहरा पत्थर का देवा।। शब्दावली, पृ0 103/294*
12. *ऐसो जन्म जरैं अब जाय हरि की भजन बिना। मुट्टी का चौरउ ऊंच के बांधिन ढूढ़ बैठि प्रभु आय।। शब्दावली, पृ0 264/742*
13. *तुरन लै मुर्दा को बन में गाड़ते, हिन्दू लै आग के बीच जारैं। पूरब व गये हैं वे कच्छूं को, दोउन बेबफ होय खाक ढारैं।। पलटू साहिब की बानी भाग 2, पृ0 38/99*
14. *आदि अन्त में कनक है, गहना मध्य में होय। पलटू तैसे जन्म है, गहना कनक न दोय।। शब्दावली, पृ0 319/28*

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *पीताम्बर दत्त बड़थवाल, हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय, 1973, दिल्ली।*
2. *पी0एन0 चौपड़ा, मध्यकालीन भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास, 1973, दिल्ली।*
3. *लईक अहमद, मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, 1995, इलाहाबाद।*
4. *के0 दामोदरन, भारतीय चिन्तन परम्परा, 1980, नई दिल्ली।*
5. *सन्त पलटूदास साहिब की बानी, बेवीडियर प्रेस, 1982, इलाहाबाद।*